International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 25-07-2020; Accepted: 10-08-2020; Published: 26-08-2020
www.alleducationjournal.com
Volume 5; Issue 4; 2020; Page No. 77-79

शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन में अन्तः कियात्मक सम्बन्धः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रेमा आर्या [1], अभिमन्यु कुमार [2]

[1] शोध छात्रा, समाजशास्त्र, रा0स्ना0महाविद्यालय, रानीखेत, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड, भारत

[2] शोध निर्देशक, समाजशास्त्र, रा0स्ना0महाविद्यालय, रानीखेत, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड, भारत

प्रस्तावना

शिक्षा समाज का आइना है और साथ ही साथ सामाजिक आर्थिक विकास की मूल अवधारणा है जो व्यक्ति को अज्ञानता से आत्मज्ञान में परिवर्तित कर देती है, सामाजिक पिछड़ेपन के आधारों से लेकर सामाजिक अम्लीयकरण, प्रकार और अविकसित से सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में कार्य करती है। 1964 में UNSCEO के आम सम्मेलन ने भी माना है कि अशिक्षा सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण बांधा है। शिक्षा ही एक ऐसा साधन है, जो ग्रामीण भारत को स्वर्णिम योग में बदल सकती है।'' शिक्षा को समाज के एक धरोवर के रूप में भी देखा जाता है परन्तु यह मनुष्यों की रूढ़िवादी सोच और समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।शिक्षा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बदलाव एवं परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक है तथा समतामूलक समाज के निर्माण एवं विकास में भी इसकी सर्वोच्च भूमिका है। 21वीं शाताब्दी में आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए सुशिक्षित जनता का सुसंगत ज्ञान, विचार और कौशल से विकसित होना अति आवश्यक है। भारत देश के लिए तो यह बात विशेष रूप से सही है। भारत में 10 से 24 आयु वर्ग के लोगो की आबादी सबसे अधिक है। यही वे लोग है जो देश के अच्छे भविष्य की बुनियाद रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। रखते है इतना ही नही भारतीय समाज की 70 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। इसलिए शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन का केन्द्र बिन्दु ग्रामीण समाज को बनाना है।[1]

शिक्षा समाज की आवश्यकताओं को पूरा करती है, तथा ऐसे विचारों का प्रसार करती है जिनके द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्र में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते रहे है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया हैं। इसलिए प्रत्येक समाज अपनी अपनी आवश्यकताओं तथा आंकाक्षाओं के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करता है। भारत की अधिकतर जनसंख्या आज भी गांवों में रहती है इसलिए ग्रामीण भारत में शिक्षा का विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। क्योकि मात्र गांवों में रहने वाले अधिकतर लोग शिक्षा की महत्वता को समझ चुके है और यह भी जानते है कि गरीबी से ऊपर उठने का यही एक रास्ता है लेकिन पैसों की कमी के कारण लोग अपने बच्चों को निजी स्कूलों में नही प्रवेश दिला पाते है और शिक्षा के लिए सरकारी स्कूलों पर निर्भर रहते है।ग्रामीण समाजों में शिक्षा की स्थिति इस क्रान्तिकारी दौर में भी संतोष जनक नही है। यह हमारे समाज का दुर्भाग्य है कि जहां सारी दुनिया शिक्षा के क्षेत्र में आकाश की बुलंदियों को छू रही है, वही हमारें देश भारत की ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति अभी भी चिंता जनक है। यदि ग्रामीण क्षेत्रों के लोग शिक्षित होगे तो कृषि की नई तकनीक का प्रयोग कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना पाऐगे न केवल कृषि के क्षेत्र में बल्कि हर क्षेत्र में अपने देश को प्रगति की ओर ले जायेगे।[2]

साहित्य पुनरावलोकन

डी0एल0शर्मा (2008)– सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव के रूप में शिक्षा– तेजी से हो रहे सामाजिक परिवर्तन को जीवन के सभी क्षेत्रों में यदि नही अपनाया जाता तो सांस्कृतिक विलम्बन की स्थिति आती है। जिसे शिक्षा द्वारा ही दूर किया जा सकता है। यदि द्रुत सामाजिक–परिवर्तन के साथ शिक्षा में भी द्रुत परिवर्तन नही किये जाते तो बहुत हानि की सम्भावना रहती है। इसलिये ऐसी स्थिति में शिक्षा को एक गत्यात्मक नीति अपनाने की आवश्यकता होती है कारण यह है कि सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा को प्रभावित करता है और यदि शिक्षा उन प्रभावों को ग्रहण करने में असमर्थ हो जाये तो सामाजिक परिवर्तन लाया नही जा सकता। अतः सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव के रूप में शिक्षा का विस्तार उसकी संरचना उद्देश्य आदि में परिवर्तन अपरिहार्य होता है।

गिरीश पचौरी (2009)– का कहना है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण और सशक्त साधन है। डॉ0 राधाकृष्णन ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का साधन मानते हुये कहा कि, "शिक्षा परिवर्तन का साधन है जो कार्य साधारण समाज में परिवार, धर्म, सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं द्वारा किया जाता है, वही आज शिक्षा संस्थाओं के द्वारा किया जाता है।"शिक्षा के द्वारा ही हम समाज के लोगों के विचारों में बदलाव ला सकते है और समाज की उन्नति कर सकते है।

अध्ययन का उद्देश्य– उत्तरदाताओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन की स्थिति का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति एवं अध्ययन क्षेत्र– प्रस्तुत अध्ययन अल्मोड़ा जनपद के ताड़ीखेत विकासखण्ड के 7 ग्रामों का चयन दैव निर्दशन पद्धति के द्वारा किया है। प्रस्तुत अध्ययन में समग्र के रूप में 403 उत्तरदाताओं का चुनाव दैव निदर्शन की लॉटरी पद्धति के द्वारा किया गया। आंकड़ो को संग्रह के लिए अनुसूची साक्षात्कार का प्रयोग किया गया है। तत्पश्चात् आकड़ों के विश्लेषण के लिए काई स्क्वायार टेस्ट की गणना की गयी है।

उत्तरदाताओं की सामाजिक, पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति के परिवर्तन के सम्बन्ध में शिक्षा की भूमिका

शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तनः– ग्रामीण समाजों में शिक्षा द्वारा पारिवारिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन की स्थिति की जानकारी प्राप्त की गयी, प्राप्त सूचनाओं के आधार पर

उत्तरदाताओं की पारिवारिक स्थिति में शिक्षा द्वारा परिवर्तन का विश्लेषण किया गया। उत्तरदाताओं की पारिवारिक स्थाति में परिवर्तन को 3 श्रेणियों में विभाजित किया गया। जैसे–कम परिवर्तन, सामान्य परिवर्तन, अधिक परिवर्तन। तत्पश्चात् उपरान्त उत्तरदाताओं की पारिवारिक स्थिति को आर्थिक एवं सामाजिक आधार पर निम्न तालिकाओं द्वारा विश्लेषण किया गया है जो निम्न प्रकार है–

तालिका 4.1: ताड़ीखेत विकासखण्ड के ग्रामों में उत्तरदाताओं के शिक्षा के संदर्भ में पारिवारिक स्थिति का विवरण

क0सं0	उत्तरदाताओं की पारिवारिक स्थिति	शिक्षा से पूर्व उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	शिक्षा के बाद (वर्तमान) उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	निम्न	233	57.8	60	14.88
2	मध्यम	109	27.00	189	46.89
3	उच्च	61	15.2	154	38.21
	कुल योग	403	100	403	100

तालिका 4.1 में उत्तरदाताओं के शिक्षित होने से पूर्व एवं शिक्षित होने के बाद की पारिवारिक स्थिति को प्रदर्शित किया गया है। तालिका के अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि निम्न परिवारिक स्थिति वाले उत्तरदाताओं की शिक्षा से पूर्व संख्या 233 है, जिसका प्रतिशत 57.8 तथा शिक्षा के बाद की संख्या 60 है, जिसका प्रतिशत 14.88है। इस प्रकार मध्यम परिवारिक स्थिति वाले उत्तरदाताओं की शिक्षा के पूर्व 109 है, जिसका प्रतिशत 27. 00 तथा शिक्षा के बाद संख्या 189, जिसका प्रतिशत 46.89है। अतः उच्च पारिवारिक स्थिति वाले उत्तरदाताओं की संख्या शिक्षा से पूर्व 61है, जिसका प्रतिशत 15.2 तथा शिक्षा के बाद 154 जिसका प्रतिशत 38.21है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि निम्न पारिवारिक स्थिति वाले उत्तरदाताओं की संख्या शिक्षा से पूर्व मध्यम एवं उच्च पारिवारिक वाले उत्तरदाताओं की संख्या से अधिक थी। उसी प्रकार निम्न पारिवारिक स्थिति वाले उत्तरदाताओं की संख्या शिक्षा के बाद मध्यम एवं उच्च पारिवारिक स्थिति वाले उत्तरदाताओं से कम थी।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा द्वारा निम्न पारिवारिक स्थिति वाले उत्तरदाताओं की संख्या में परिवर्तन हुआ है। इसी प्रकार मध्यम एवं उच्च पारिवारिक स्थिति वाले उत्तरदाताओं की संख्या में अपेक्षाकृत अधिक परिवर्तन हुआ है।

तालिका 4.2: ताड़ीखेत विकासखण्ड के उत्तरदाताओं की पारिवारिक स्थिति में शिक्षा द्वारा परिवर्तन

क0सं0	पारिवारिक स्थिति में परिवर्तन	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	कम परिवर्तन	18	4.6
2	सामान्य परिवर्तन	111	27.5
3	अधिक परिवर्तन	274	67.9
	कुल योग	403	100

तालिका 4.2 में उत्तरदाताओं की पारिवारिक स्थिति में शिक्षा द्वारा परिवर्तन को दर्शाया गया है। उपरोक्त तालिका के अवलोकन करने के पश्चात ताड़ीखेत विकासखण्ड के 18 उत्तरदाताओं ने बताया कि शिक्षा द्वारा उनकी पारिवारिक स्थिति में कम परिवर्तन हुआ जिसका प्रतिशत 4.6है तथा 111 उत्तरदाताओं ने बताया कि शिक्षा द्वारा उनकी पारिवारिक स्थिति में सामान्य परिवर्तन हुआ जिनका प्रतिशत 27.5है। इसी प्रकार सर्वेक्षण के दौरान 274 उत्तरदातओं ने बताया कि शिक्षा द्वारा उनकी पारिवारिक स्थिति में अधिक परिवर्तन हुआ, जिनका प्रतिशत 67.9है।

अतः उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि शिक्षा द्वारा उत्तरदाताओं की पारिवारिक स्थिति में दो तिहाई से अधिक 67.9 प्रतिशत परिवर्तन हुआ।

तालिका 4.3: ताड़ीखेत विकासखण्ड के उत्तरदाताओं के पारिवारिक स्थिति एवं जातीय आधार पर शिक्षा द्वारा परिवर्तन एवं अर्न्तसम्बन्ध

क0सं0	सामाजिक वर्ग	कम परिवर्तन		सामान्य परिवर्तन		अधिक परिवर्तन		कुल योग
		उत्तरदाताओं की संख्या	अनुमानित संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	अनुमानित संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	अनुमानित संख्या	
1	सामान्य जाति	2	8.21	50	50.67	132	125.10	184
2	अन्य पिछड़ा वर्ग	6	2.2	13	14.39	26	30.58	45
3	अनु0 जाति/अनु0 जनजाति	10	7.77	48	47.92	116	118.30	174
	कुल योग	18	18	111	111	247	274	403

x^2=13.151

काई वर्ग का प्राप्त मान = 13.151

स्वतंत्रता अंश (df)=(3-1)x(3-1)=2x2=4

सम्भाव्यता स्तर = 0.05

स्वतंत्रता अंश 4 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.05 पर सारिणी काई स्क्वायार = 9.488

अगणित (calculated Value) काई स्क्वायर का मान 13.151 स्वंतत्रता अंश एवं सम्भाव्यता स्तर 0.05 पर सारिणी काई स्क्वायार (9.488) से अधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि उत्तरदाताओं की परिवारिक एवं जातीय आधार पर शिक्षा द्वारा परिवर्तन की प्रवृति में सार्थक अन्तर है।

तालिका 4.4: ताड़ीखेत विकासखण्ड के उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति में शिक्षा द्वारा परिवर्तन एवं अर्न्तसम्बन्ध

क्र0सं0	आर्थिक वर्गवार	कम परिवर्तन		सामान्य परिवर्तन		अधिक परिवर्तन		कुल योग
		उत्तरदाताओं की संख्या	अनुमानित संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	अनुमानित संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	अनुमानित संख्या	
1	निम्न आय वर्ग	3	2.59	18	15.97	37	39.43	58
2	मध्यम आय वर्ग	7	4.33	32	26.71	58	65.95	97
3	उच्च आय वर्ग	8	11.7	61	68.30	179	168.61	248
	कुल योग	18	18	111	111	274	274.00	403

x^2=7.297
काई वर्ग का प्राप्त मान = 7.297
स्वतंत्रता अंश (df)=(3-1)x(3-1)=2x2=4
सम्भाव्यता स्तर = 0.05
स्वतंत्रता अंश 4 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.05 पर सारिणी काई स्क्वायार = 9.488

अगणित (calculated Value) काई स्क्वायार का मान (7.297) स्वतंत्रता अंश 4 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.05 पर सारिणी का काई स्क्वायार (9.488) से कम है। अतः यह कहा जा सकता है कि आर्थिक वर्गवार उत्तरदाताओं के आर्थिक स्थिति में परिवर्तन की प्रवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।
उपरोक्त तालिका 4.4 से यह स्पष्ट होता है कि निम्न आय वर्ग के उत्तरदाताओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति में, मध्यम एवं उच्च आय वर्ग वाले उत्तरदाताओं की स्थिति की तुलना में कम परिवर्तन हुआ है।

निष्कर्ष

शिक्षा को समाज के एक धरोवर के रूप में भी देखा जाता है परन्तु यह मनुष्यों की रूढ़िवादी सोच और समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।शिक्षा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बदलाव एवं परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक है तथा समतामूलक समाज के निर्माण एवं विकास में भी इसकी सर्वोच्च भूमिका है। शिक्षा समाज का आइना है और साथ ही साथ सामाजिक आर्थिक विकास की मूल अवधारणा है जो व्यक्ति को अज्ञानता से आत्मज्ञान में परिवर्तित कर देती है, सामाजिक पिछड़ेपन के आधारों से लेकर सामाजिक अम्लीयकरण, प्रकार और अविकसित से सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में कार्य करती है।
उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि निम्न पारिवारिक स्थिति वाले उत्तरदाताओं की संख्या शिक्षा से पूर्व मध्यम एवं उच्च पारिवारिक वाले उत्तरदाताओं की संख्या से अधिक थी। उसी प्रकार निम्न पारिवारिक स्थिति वाले उत्तरदाताओं की संख्या शिक्षा के बाद मध्यम एवं उच्च पारिवारिक स्थिति वाले उत्तरदाताओं से कम थी। तथा उपरोक्त तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि शिक्षा द्वारा उत्तरदाताओं की पारिवारिक स्थिति में दो तिहाई से अधिक परिवर्तन हुआ।

सन्दर्भ सूची

1. कुरूक्षेत्र– जून 2018 (सुरभि जैन और पूरबी पटनायक).
2. शिक्षा का दर्शनशास्त्र और समाजशास्त्र– एन0आर0स्वरूप सक्सेना 2016, डॉ0 सत्यवीर सिंह चौधरी.
3. शिक्षा का दर्शन एवं समाजशास्त्र– 2016 प्रो0 गिरीश पचौरी, आर0लाल0 बुक डिपो।
4. दुबे,सत्य नारायण शरेतन्दु "शिक्षा की नवीन दार्शनिक पृष्ठभूमि", अनुभव पब्लिकेशिंग हाउस, इलाहाबाद पृष्ठ संख्या 16–301
5. कृष्णमूर्ति जे0 "शिक्षा क्या है" राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली सन् 2006, पृष्ठ संख्या 7–13